ATS VALLEY SCHOOL
EXPLORE LEARN LEAD

फ़तह

हिंदी की मासिक पत्रिका

दिसंबर (2022)

शीतकाल

सर्दी और नानी का घर
आ गई है शीत लहर,
चलो चले नानी के घर।
स्कूल में हो गई है छुट्टी
अब होगी बस मस्ती,
वहाँ मिलेगा हलवा और गरम पराठे,
सब मिलकर धुप में जाकर लगाएंगे खूब ठहाके,
टूक-टूक बजते होंगे दाँत,
सर्दी में जम जायेंगे हाथ।
स्वेटर लेकर हाथो में नानी करेंगी पीछा,
सर्दी में लगता है बस गरम दूध ही अच्छा,
मामा-मामी नानू और भाई
मिलकर खूब खिलाते,
इसी तरह नानी के घर
सर्दी के दिन बहुत लुभाते।

रुद्रांश (2ब)

मौसम ने ली फिर अंगड़ाई,
देखो-देखो ठंडी आई।
बंद हो गए पंखे सारे,
निकल गई सबकी रज़ाई।
देखो-देखो ठंडी आई।

नितांशी मेहरा (4अ)

बाहर निकलने से डरते हैं,
ठंड में सब ठिठुरते हैं।
जब नाक हमारे बहते हैं,
तब मम्मी-पापा कहते हैं-
पहन लो गर्म कपड़े वरना हो जाएगा बुरा हाल।
क्योंकि शुरू हो गया है शीतकाल।

गोबिंददीप (5अ)

ठंड के मौसम से मुझे प्यार है,
शीतकाल में बर्फ और धुंध का जाल है।

खुशांत वर्मा (5अ)

ठंड का मौसम आया अपार,
बंद हो गया पंखों का संसार।
हीटर ने अपनी जगह जमाई,
निकल आई है कंबल और रज़ाई।

जाह्नवी (7अ)

शीतकाल का मौसम आया,
थर-थर के इसने सबको कंपाया।
ढेर सारे पकवान बनाओ,
इस मौसम का आनंद उठाओ।
ओढ़ लो कंबल और रजाई,
सपनों की एक दुनिया बसाओ।
शीतकाल का मौसम आया,
अपने संग ठंड है लाया।

कनकजोत (7ब)

उफ्फ! आया सर्दी का मौसम,
सब बैठकर सेकेंगे आग।
सूर्य की गर्मी को जो टक्कर दे,
चारो ओर धुंध और कोहरा छाए।
परेशान करते दिन भर के छोटे बड़े काम,
सोचे यहीं बस करे रजाई में आराम।
सरसो का साग, रोटी मक्का,
करे सर्दी मे, तन की रक्षा।
उफ्फ! आया सर्दी का मौसम।

मेहुल जैन (2ब)

ठंड का मौसम मुझे है भाता,
पर कोई आइसक्रीम ना खा पाता।
गरम-गरम सब खाते पकवान,
नानी के घर जाते हम बनकर मेहमान।

पृषा (3ब)

मौसम बदला सर्दी आई,
बर्फ संग धुंध भी लाई।
टोपी-स्वेटर हमने पहने,
तैयार हो गए ठंड को सहने।

कीथ हुसैन (7अ)

शीतकाल है आया,
हमें बहुत है भाया।
हीटर,कंबल का निकल आए,
गर्म पानी से हम नहाए।

ज़ौहेन(4अ)

कालों में काल शीतकाल,
पहाड़ों की चोटियाँ बर्फ से चमकी,
ठंडी हवाएँ आ दमकी।
मैदानों में छाया कोहरा,
अवकाश मिलने से सुख हो गया दोहरा।
पंखे को सबने बंद किया,
हीटर ने सबका मन मोह लिया।
रजाई और कंबल खुद पर इतराते हैं,
वो ठंड को दूर जो भगाते हैं।
नानी के घर की यात्रा सबको भाती,
कहानी सुनने में भी मज़ा है आती।
देर से जागते देर से सोते,
अवकाश के आनंद में सुध-बुध खोते।
सूरज का सब करते इंतजार,
पर बर्फ देखने को भी होते बेकरार।
गृह कार्य करने का ख्याल तब मन में आता है,
जब अवकाश खत्म होने पर मन घबराता है।
शीतकाल मुझको बहुत लुभाए,
काश! शीतकाल मई-जून में भी आए।

ध्रुव चौहान (9अ)

खुशियों का माहौल है छाया,
ठंड के साथ फिर शीतकाल आया।
गर्म पानी से मम्मी ने नहलाया।
मोटे कपड़े पहनो,यह भी समझाया।
छुट्टियों में हम खुशियों को जोड़ें,
ठंड में कंबल-रजाई ओढ़े।
मुझको यह मौसम बहुत है भाया,
ठंडी साथ लिए शीतकाल है आया।

रिशिका (2अ)